गुरु नानक – सबद १७

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥
मंनै परवारै साधारु ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
मंनै नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

सार: पूर्ण स्वीकृति बिना किसी शर्त के इसे सन्निहित करना है; इस तरह सार्वभौमिक जागरूकता के प्रकाश के लिए शिक्षा को सीखने, आत्मसात करने और फैलाने के कई दरवाज़े खुलते हैं।

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥
जो स्वीकृति का प्रतीक हैं वह स्वयं को मुक्त करने के लिए ज्ञान का द्वार ढूंढते हैं।

मंनै परवारै साधारु ॥
जो स्वीकृति को मूर्त करते हैं वह अपने अनुभवात्मक ज्ञान को अपने साथी प्राणियों तक फैलाते हैं।

मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
जो स्वीकृति को धारण करते हैं वह स्वयं को, ज्ञानियों को, और साधकों को मुक्त कर देते हैं।

मंनै नानक भवहि न भिख ॥
नानक कहते हैं कि स्वीकृति का रूप धारण करने वाले ज्ञान के वरदान की भीख लेकर अज्ञानता में नहीं भटकते।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
ऐसे प्राणियों का अस्तित्व पवित्र है।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥
जो स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह अपनी स्थिति से अवगत रहते हैं। (१५)

तत्त्व: जो लोग स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह अपने मूल अस्तित्व के एक स्तर तक पहुंचने के लिए अपनी धारणाओं को बदलने की क्षमता हासिल करते हैं जहां वह स्वयं को और दूसरों को द्वैत से मुक्ति के लिए प्रेरित करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com